सत्तर बरस लों आग जलाए, तब फरिस्ते दिए चलाए।
अजाजील विरहा आग जल, पीछे असराफीलें किए निरमल।। ४२ ।।

श्रीजी के अदृश्य होने पर सच्चे ज्ञान के आशिक रूहें विरह की अग्नि में पश्चाताप करते हुए जले। धिक्कार है, हमारे जीवन पर कि धाम धनी आए और हमने पहचान नहीं की। इसके बाद अजाजील ने भी विरह की अग्नि में जलकर पश्चाताप किया और फिर असराफील की जागृत बुद्धि की वाणी कुलजम सरूप ने निर्मल कर दिया।

आगे असराफीलें कायम किए, तेरही में नूर नजर तले लिए।
नूर नजर तले हुए सुध, आए माहें जाग्रत बुध।। ४३ ।।

इसके बाद असराफील (जागृत बुद्धि के फरिश्ते) ने तेरहवीं सदी में अक्षर की नजर योगमाया में सभी को कुलजम सरूप की वाणी से पाक करके बहिश्तों को कायम किया।

नतीजा पावे सब कोए, सो हुकम हाथ छत्रसाल के होए।। ४४ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज के हुकम से महाराजा छत्रसालजी सभी को उनके कर्मों के अनुसार बहिश्तें कायम कर अखण्ड मुक्ति प्रदान करेंगे।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। १९१ ।।

हुइयां सोभा तेरी सोहागनियां, इन जुबां न जाए बरनियां।
ए जो मिलावा माननियां, ताए बड़ाइयां दैयां धनियां।। १ ।।

स्वामी श्री प्राणनाथजी महाराज कहते हैं, हे शाकुंडल सखी! (महाराजा छत्रसाल) खेल से परमधाम तक तेरी शोभा होनी है जो इस जबान से वर्णन नहीं हो सकती। यह बारह हजार मोमिनों के अन्दर तुम्हें श्री राजजी महाराज ने बड़ी साहेबी दी है।

कदम हादी मेरे सिर पर, जो सब दीनों का पैगंमर।
हजरत ईसा रूहअल्ला नाम, कहूंगी जो कह्या अल्ला कलाम।। २ ।।

महाराजा श्री छत्रसालजी कहते हैं कि मेरे सिर पर हादी श्री प्राणनाथजी के चरण कमलों की मेहर साक्षात् है जो सभी धर्मों के धर्मग्रन्थों से प्रमाण देकर पैगाम देते हैं। रूह अल्लाह श्री श्यामा महारानी जी (श्री देवचन्दजी) के तारतम ज्ञान से और रसूल साहब के कुरान से गवाही देकर कहता हूं।

रसूल रूहअल्ला और इमाम, इन तीनों मिल मोको दई ताम।
मैं सिर पर ए लिए कलाम, आए कुंजी बका की करी इनाम।। ३ ।।

रसूल साहब, रूह अल्लाह श्यामा महारानी और इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज तीनों ने मिलकर कुलजम सरूप की अखण्ड वाणी (आत्मा का आहार) को दिया। इन तीनों स्वरूपों के वचनों को मैंने सिर पर धारण किया, जिन्होंने खेल में आकर मुझे तारतम ज्ञान की कुंजी बख्शीश की।

ए साहेदी सिपारे सूरत, जो उतरियां अल्ला आयत।
या तो हदीसें कहूं महंमद, या बिन और न कहूं सब्द।। ४ ।।

यह गवाही कुरान के सिपारों और सूरतों में लिखी है। खुदा की तरफ से जो आयतें आई हैं या मुहम्मद साहब ने जो हदीस में कहा है इनके प्रमाण के बिना और कोई शब्द नहीं कहूंगी।

Nijanand App

बावन मसले जो कहे अरकान, जो बजाए ल्यावे मुसलमान।
तिनका कौल था एते दिन, सांचे पाक दिल किए जिन।।५ ।।

जो सच्चे दिल वाले मुसलमान बावन अंग धोकर शरीयत की नमाज पढ़ते हैं। कयामत के जाहिर होने पर शरीयत की नमाज बन्द करने का हुकम है।

ए बंदगी कही सरीयत, याको फल पावें खुले हकीकत।
जब खोले दरवाजे मारफत, पोहोंची सरत आई कयामत।।६ ।।

यही शरीयत की बन्दगी कही है, जिसका फल उनको हकीकत के ज्ञान से मिलेगा। रसूल साहब ने जो कयामत का दिन बताया है, वह समय आ गया है और कुलजम सरूप की वाणी ने मारफत के सभी भेद खोल दिए हैं।

और लिख्या सिपारे पांचमें, सो नीके कर देखो तुमें।
कृपा भई हिंदुओं पर घनी, जित आखिर को आए धनी।।७ ।।

कुरान के पांचवें सिपारे में यह बातें इशारतों में लिखी हैं, इसलिए आत्मदृष्टि से देखो। तब तुम्हें यह जानकारी होगी कि श्री राजजी महाराज की विशेष कृपा हिन्दुओं पर हुई है कि आखिर को धनी ने आकर हिन्दू तन धारण किया है।

सब पैगंमर आए इत, कह्या सब मुलक नबुवत।
जो कोई आया पैगंमर, सो सारे जहूदों के घर।।८ ।।

खुदा का पैगाम देने वाले सभी पैगम्बर हिन्दुओं में आए। उन सबकी शक्तियां श्री प्राणनाथजी के तन में आईं, तो सारा मुल्क पैगम्बरों का हो गया।

ज्यों अव्वल त्योंहीं आखिर, सोभा सारी महंमद पर।
ए तुम देखो नीके कर, सारे कुरान में एही खबर।।९ ।।

जैसे सभी पैगम्बर हिन्दुओं में ही आए थे, वैसे ही आखिर में भी सभी पैगम्बर हिन्दुओं में आए हैं। पूरे कुरान में सब जगह यही खबर है कि इन सब पैगम्बरों की शोभा, बरकत, सिफत, शक्ति, इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी में आ गई है।

लोक ढूंढ़ें माहें मुसलमान, सूझत नाहीं जो लिख्या कुरान।
अव्वल सिपारे एह सुध दई, सो मैं जाहेर करहों सही।।१० ।।

यह बात कुरान के पहले सिपारे में लिखी है जो मैं आपको जानकारी दे रही हूं। जाहिरी मुसलमानों को यह बात समझ में नहीं आ रही है। वह अभी भी अपनी कौम में आने की इन्तजार कर रहे हैं।

हरफ अलफ लाम और मीम, ए तीनों एक कहे अजीम।
जिन न जान्या एह जहूर, सो काट कुरानसे किए दूर।।११ ।।

कुरान के पहले शुरू में अलफ, लाम और मीम तीन अक्षर लिखे हैं। यह तीनों एक ही हैं और अखण्ड हैं और बड़े रहस्य का अर्थ रखते हैं जिसे कोई नहीं जानता। जाहिरी मुसलमानों ने इसकी पहचान न होने के कारण कुरान से हटा ही दिया है।

याको जाने खुदा एक, ऐसो बांध्यो बंध विवेक।
कलाम अल्लाएं ऐसी कही, आलम आरिफकी हुज्जत ना रही।।१२ ।।

कुरान (हदीस) में कहा है कि इन तीन अक्षरों का भेद एक खुदा ही जानता है, इसलिए पढ़े-लिखे लोगों का इस पर दावा नहीं है।

Nijanand App

और लिख्या है बीच कुरान, दूसरे सिपारेमें एह बयान।
इनका जित खुल्या है द्वार, तिनका दिल दे करो विचार।। १३ ।।

कुरान के दूसरे सिपारे में लिखा है कि इन तीनों हरफों का भेद काजी खोलेगा। वह खुद खुदा होगा। इसका दिल से अच्छी तरह से विचार करो।

ए महंमद पर दिया खिताब, माएने खोले सब किताब।
सो माएने रूजू उमतसें होए, खासी उमत कहिए सोए।। १४ ।।

इन तीनों हरफों का भेद श्री राजजी महाराज ने इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी को दिया है, इसलिए अब श्री प्राणनाथजी महाराज कुरान, हदीस, वेद, शास्त्र सब किताबों के गुझ (गुह्य) भेद खोलकर जाहिर करते हैं। इससे मोमिनों को पहचान होती है, इसलिए कि खासल खास ब्रह्मसृष्टियां आई हैं। वह अपने धनी के स्वरूप को पहचान रही हैं।

महंमदकी इनपे पेहेचान, भली भांत समझें कुरान।
जैसे पेहेचानने का हक, इन उमतको नहीं कोई सक।। १५ ।।

कुरान, हदीस और सब किताबों के छिपे रहस्य समझकर ही श्री प्राणनाथजी की पहचान मोमिन करते हैं। परमधाम में विराजमान श्री राजजी महाराज के स्वरूप को मोमिन जानते हैं। उसी रूप में मोमिन श्री प्राणनाथजी को मानते हैं और इस बात में उनको कोई संशय नहीं है।

जिनको किताब दई तौरेत, सब दुनियां को एही सुख देत।
माहें लिख्या सिपारे उन्तीस, जाए देवें खुदा तासों कैसी रीस।। १६ ।।

श्री राजजी महाराज ने हकी स्वरूप स्वामी श्री प्राणनाथजी के कलस की वाणी को मोमिन पढ़कर निःसन्देह होकर पहचान करें कि यही दुनियां को अखण्ड सुख देने वाले हैं। कुरान के उन्तीसवें सिपारे में लिखा है कि खुदा जिस पर मेहरबानी करे, उसकी कौन रीस करे (मुकाबला करे)?

आए ईसा रूहअल्ला पैगंमर, गिरो जहूदों बनी असराईल पर।
जो गिरो बनी असराईलकी भई, सो औलाद याकूबकी कही।। १७ ।।

ईसा रूह अल्लाह (देवचन्द्र जी महाराज) के दो बेटे एक बनी इस्माईल (बिहारीजी) और दूसरे बनी असराईल (मेहराज ठाकुर) हिन्दुओं में आए। कुरान में इनको इस्माईल और इसहाक करके लिखा है। इसहाक की औलाद याकूब का खिताब मेहराज ठाकुर को मिला, इसलिए मोमिन को कुरान में याकूब की औलाद लिखा है।

हुए सामिल रसूल महंमद, रूहअल्ला इस्म हुआ अहमद।
संग रोसन तौरेत कुरान, सो रान्या जाए न हुई पेहेचान।। १८ ।।

रसूल साहब ईसा रूह अल्लाह (श्यामा महारानी) के अन्दर आकर मिले, तो ईसा रूह अल्लाह श्यामा महारानी अहमद हुए। इनके ही दूसरे जामे का नाम प्राणनाथजी है जिनके द्वारा कलस (तौरेत) और सनंध (कुरान) की नई किताबें जाहिर हुई हैं। इनके स्वरूप को जिसने नहीं पहचाना, वही रद्द हो गया।

भए जहूदों के बड़े बखत, पाई बुजरकी आए आखिरत।
इत जाहेर हुए इमाम हक, सोई काफर जो ल्यावे सक।। १९ ।।

हिन्दू बड़े भाग्यशाली हुए कि आखिरी जमाने के खाविंद श्री प्राणनाथजी महाराज हिन्दुओं में आए और यही इमाम मेंहेंदी के रूप में जाहिर हुए। इनके ऊपर जो संशय लाता है, वह काफिर है, बेईमान है।

Nijanand App

उल्लू न चाहे ऊग्या सूर, जिन अंधों का दुस्मन नूर।
ए सुन वाका जो न ल्यावे ईमान, सोई चमगीदड़ उल्लू जान।। २० ।।

उल्लू (घुवड) पक्षी को रात में दिखाई देता है। वह नहीं चाहता कि सूर्य निकले, क्योंकि सूर्य के प्रकाश से यह अन्धा हो जाता है। श्री प्राणनाथजी की कुलजम सरूप की वाणी पर जो ईमान नहीं लाते हैं, उनको ही उल्लू (घुवड) और चमगादड़ समझना, क्योंकि यह वाणी सूर्य के समान अज्ञानता का अन्धकार मिटाकर उजाला करने वाली है।

महंमद के कहावें मुसलमान, ए जो जाहेरी लिए ईमान।
जो तौहीदका कलमा कहे, उमत सरीकी लिए रहे।। २१ ।।

रसूल साहब के मजहब को जाहेरी मायनों से मानने वाले लोग अपने को ईमानदार कहते हैं। यदि यह सच्चे होकर एक पारब्रह्म के वचनों को कहें, तो यह मोमिनों का दावा कर सकते हैं।

जो होए इस्क आकीन साबित, तो भी झूठी ए सरीकत।
सिरे न पोहोंच्या इनका काम, ऐसा लिख्या माहें अल्ला कलाम।। २२ ।।

यदि इन मुसलमानों में इश्क और ईमान सच्चा भी साबित हो जाए तो भी यह मोमिनों की बराबरी नहीं कर सकते। मोमिनों ने दुनियां में श्री राजजी के स्वरूप को पहचान कर कुर्बानी दी है। वैसी शरीयत वाले कुरबानी नहीं दे सकते। ऐसा कुरान में लिखा है।

सिपारे तीसरेमें कही, पांच वज्हे की पैदास भई।
दुनियां हुई केहेते कलमें कुंन, एक एक हाथ एक दो हाथन।। २३ ।।

कुरान के तीसरे सिपारे में पांच तरह की पैदाइश का वर्णन है। दुनियां कुंन शब्द कहने से पैदा हुई। खुदा ने रसूल साहब को एक हाथ से कहा है और उनकी दो सूरतें मलकी और हकी को दो हाथ से कहा है।

एक सरूप कह्या एक हाथ, दो हाथ सरूप मिले दो साथ।
रसूल रूहअल्ला और इमाम, एक सरूप तीनों बिध नाम।। २४ ।।

एक स्वरूप रसूल साहब को एक हाथ कहा है। यह दो स्वरूप मलकी और हकी ने एक तन में बैठकर काम किया। यह दो हाथ कहलाए। रसूल साहब एक हाथ (अकेले) ने काम किया। रूह अल्लाह और इमाम मेंहेंदी दोनों ने एक तन मेहराज ठाकुर के अन्दर काम किया। इन्हें दो हाथ से पैदा हुए कहा है। खुदा के हुकम को बजाने वाले एक स्वरूप के तीन नाम हैं।

एक गिरो आई मूलथें कही, सो मौजूद रूहें दरगाह की सही।
दूजी गिरो कही खिलकत और, सो मलायक मुतकी नूर ठौर।। २५ ।।

एक परमधाम से आई मोमिनों की जमात है। दूसरी जमात फरिश्तों की ईश्वरीसृष्टि बताई हैं जो अक्षरधाम की बन्दगी करने वाले हैं और अक्षरधाम के रहने वाले हैं।

तीसमें सिपारे लिखी ए बिध, सो क्यों पावे बिना हिरदे सुध।
नूह नबी के बेटे तीन, तिनमें स्याम सलाम अमीन।। २६ ।।

कुरान के तीसवें सिपारे में यह बात लिखी है, परन्तु बिना जागृत बुद्धि के इसके छिपे रहस्यों की जानकारी नहीं होती। यहां नूह नबी के तीन लड़कों का बयान लिखा है। उनमें स्याम हिन्दू मुसलमानों को खुदा के सही स्वरूप की पहचान कराकर अखण्ड मुक्ति देने वाले हैं।

Nijanand App

मुस्लिम किस्ती पार पोहोंचाए, काफर तोफानें दिए डुबाए।
ए तीनों मिल दुनी रची और, सो तीनों आए जुदे जुदे ठौर।। २७ ।।

श्री कृष्ण "स्याम" ने मोमिनों को योगमाया के ब्रह्माण्ड नित्य वृन्दावन में पहुंचाकर सारे ब्रह्माण्ड का प्रलय कर दिया। इसके बाद कुरान में लिखा है कि नूह नबी के तीन बेटे स्याम, हाम और याफिस ने नई दुनियां बनाई और तीनों अलग-अलग ठिकाने आए।

चांद कह्या आरब फारस, रोसन स्याम लियो बड़ो जस।
चांद आरब दूजा कौन होए, इत महंमद बिना न पाइए कोए।। २८ ।।

अरब और ईरान में चन्द्रमा के समान रोशनी करने वाले स्याम श्री कृष्णजी को कहा है, जिसने मुहम्मद के तन में बैठकर कुरान का ज्ञान दिया और बुतपरस्ती छुड़ाकर एक दीन कायम किया। जिसमें उनको बड़ा यश मिला। मुहम्मद (श्री कृष्णजी) के बिना अरब देश का चन्द्रमा और कौन हो सकता है?

पेहेले किस्ती दई पोहोंचाए, इत फुरमान ल्याए रसूल केहेलाए।
हिसाम चांद कह्या हिंदुस्तान, ए जो पूज्या हिंदुओं साहेब जान।। २९ ।।

पहले श्री कृष्णजी ने मोमिनों को योगमाया की नाव से पार कराके योगमाया के ब्रह्माण्ड में ले जाकर संसार से पार किया और दूसरी बार वही कुरान का ज्ञान लाकर रसूल कहलाए। हिसाम को हिन्दुस्तान में प्रकाश करने वाला चन्द्रमा कहा है। हिन्दू लोगों ने इसे व्यास के अवतार को परमात्मा समझकर पूजा की, क्योंकि इन्होंने हिन्दुस्तान में कर्मकाण्ड से धर्म चलाए।

याफिस आया तुरकस्थान, तो न सक्या कोई पेहेचान।
आजूज माजूज औलाद इन, तीन फौजां होए खासी सबन।। ३० ।।

नूह का तीसरा बेटा याफिस, (कल्याणजी) तुर्किस्तान में आया जिसको कोई पहचान नहीं सका। आजूज-माजूज (दिन, रात) याफिस की औलाद हैं। यह तूला, ताबा और साबा अर्थात् प्रातः, दोपहर और सायं की फौजों से सारी दुनियां को खा जाएंगे, ऐसा लिखा है।

तीसरे सिपारे लिखे ए बोल, पढ़े न देखें दिल आंखें खोल।
नूह का बेटा बुजरक स्याम, जाको दोनों जहान में रोसन नाम।। ३१ ।।

कुरान के तीसरे सिपारे में यह हकीकत लिखी है जिसको पढ़े-लिखे लोग आत्म-दृष्टि से नहीं समझते। वासुदेव के लड़के श्री कृष्णजी की बड़ी महिमा है, जिसको हिन्दू लोग श्री कृष्णजी के नाम से और मुसलमान रसूल साहब के नाम से पूजते हैं।

स्याम ल्याए चीजें दोए, चौदे तबकों न पाइए सोए।
एक देवे अल्ला की ग्वाही, दूजी करे बयान हुकम चलाई।। ३२ ।।

(श्री कृष्णजी) मुहम्मद साहब जो दो चीजें लाए हैं वह चौदह तबक में नहीं हैं। उन्होंने रसूल साहब के तन में आकर खुदा एक है, की गवाही दी और यह कहा कि आखिर समय में खुदा आने वाला है। दूसरे खुदा के हुकम से शरीयत का झण्डा खड़ा किया।

Nijanand App

पूछे रसूल सों दोए सुकन, सो साहेब ने किए रोसन।
ए दोनों बात खुदाए से होए, इनको पूजेंगे सब कोए।। ३३ ।।

रसूल साहब के यारों ने यह दो बातें पूछीं कि कयामत कब होगी और बहिश्तें कैसे मिलेंगी? रसूल साहब ने उत्तर दिया कि खुदा खुद इमाम मेंहेंदी बनकर आएंगे। तभी कयामत होगी और दुनियां को बहिश्तें मिलेंगी, इसलिए यह दोनों खुदा से होने वाली हैं। यह होने पर दुनियां उन्हें पूजेगी।

तोफतल कलाम जो है किताब, ए लिख्या तिस बीच आठमें बाब।
उमतें सब पैगंमरों की मिली, सब दिलों आग दोजख की जली।। ३४ ।।

तोफतल कलाम नाम की जो किताब है, उसके आठवें प्रकरण में लिखा है कि जब इमाम प्रगट होंगे, उस समय सभी पैगम्बर, गुरु, धर्माचार्य तथा उनके चेले चिन्ता करने लगेंगे और उनके दिलों में दोजख की आग जलेगी।

जलती सब पैंगंमरोंपे गई, पर ठंढ़क दारू काहू थें न भई।
हाथ झटक के कह्या यों कर, हम सब सरमिंदे पैगंमर।। ३५ ।।

पश्चाताप की अग्नि में जलती हुई दुनियां अपने गुरुओं के पास जाएगी और कहेगी कि आपने हमको स्वर्ग (बैकुण्ठ) और निराकार तक का ही ज्ञान दिया जो अब नष्ट होने वाला है। आप लोगों ने हमें ब्रह्मज्ञान नहीं दिया जिससे हमें शान्ति मिलती। तब सभी धर्माचार्य झटककर कहेंगे कि हम क्या करें? हम आज शर्मसार हैं।

सब दुनियां को एही दिया जवाब, महंमद इनको लेसी सवाब।
सब दुनियां जलती महंमद पे आई, दोजख आग रसूलें छुड़ाई।। ३६ ।।

सब दुनियां वालों को उनके गुरुओं ने यही जवाब दिया और कहा कि इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ही कुलजम सरूप की वाणी देकर सबको भव से पार करेंगे, इसलिए तुम उन्हीं के पास जाओ। पश्चाताप की अग्नि से जलती हुई दुनियां श्री प्राणनाथजी के चरणों में आई। तब रसूल साहब की आखिरी हकी सूरत श्री प्राणनाथजी ने उनको दोजख की अग्नि में जलने से बचाया।

सबोंको सुख महंमदें दिए, भिस्तमें नूर नजर तले लिए।
कहे छत्ता अपनायत कर, जिन कोई भूलो ए अवसर।। ३७ ।।

श्री प्राणनाथजी ने कुलजम सरूप की वाणी से निर्मल कर अखण्ड सुख दिए। बाद में अक्षरब्रह्म की नजर योगमाया में बहिश्तों में अखण्ड करेंगे। महाराजा छत्रसाल सबको अपना समझकर कहते हैं कि भाइयो! सुन्दर अवसर आया है। हाथ से मत जाने दो।

हुई फजर मिट गई वाद, भूले बड़ो करसी पछताप।। ३८ ।।

अब अज्ञान का अन्धकार मिट गया है और कुलजम सरूप की वाणी के ज्ञान का सवेरा हो गया है। अब जो भूलेगा, उसको बड़ा पश्चाताप करना पड़ेगा।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। २२९ ।।

लिख्या सिपारे आखिरे सात दसमी सूरत, रोसन कुरान लिखी हकीकत।
मोमिनों का लिख्या मजकूर, सो ए कहूं सब देखो जहूर।। १ ।।

कुरान के आखिरी तीसवें सिपारे की सत्रहवीं सूरत में मोमिनों की बात स्पष्ट लिखी है, जो मैं कहती हूं, दिल की आंखों से देखो।

Nijanand App